3. नयी कविता

परिभाषा और स्वरूप

नयी कविता भारतीय स्वतन्त्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परम्परागत कविता से आगे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प-विधानों का अन्वेषण किया गया। यह अन्वेषण साहित्य में कोई नहीं वस्तु नहीं है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो प्रायः सभी नये वाद या नयी-नयी धाराएँ अपने पूर्ववर्ती वादों या धाराओं की तुलना में कुछ नवीन अन्वेषण की प्यास लिये दिखायी पड़ती हैं। साहित्य की यह नवीनता सदैव श्लाध्य है, यदि वह अपना सम्बन्ध बदलते हुए सामाजिक जीवन के मूल सत्यों से बनाये रखे। इस प्रकार नित नवता की एक परम्परा गतिमान रही है। फिर भी नयी कविता का नाम स्वतन्त्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया, जो अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में पूर्ववर्ती प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास हो कर भी विशिष्ट हैं। नयी कविता की प्रवृत्तियों की परीक्षा करने पर उसकी सबसे पहली विशिष्टता जीवन के प्रति उसकी आस्था में दिखायी पड़ती है। आज की क्षणवादी और लघु मानववादी दृष्टि जीवनमूल्यों के प्रति नकारात्मक नहीं, स्वीकारात्मक दृष्टि है।

नयी कविता ने जीवन को उपर्युक्त धाराओं की कविताओं की तरह न तो एकांगी रूप में देखा न केवल महत्व रूप में, बल्कि उसके जीवन को (वह चाहे किसी वर्ग का हो, चाहे व्यक्ति का हो, चाहे समाज का हो) जीवन के रूप में देखा। इसमें कोई सीमा नहीं निर्धारित की, मनुष्य किसी वर्गीय चेतना, सिद्धान्त अथवा आदर्श की बैसाखी पर चलता हुआ इसके पास नहीं आया, वह अपने सम्पूर्ण दुःख-सुख, राग-विराग के परिवेश से संयुक्त राम मनुष्य के रूप में आया।

नयी कविता हिन्दी साहित्य में सन् 1951 के बाद की उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परम्परागत कविता से आगे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्पविधान का अन्वेषण किया गया। यह प्रयोगवाद के बाद विकसित हुई हिन्दी कविता की नवीन धारा है। नयी कविता अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट है।

नयी कविता हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में प्रयोगवाद से कुछ भिन्नताओं के साथ विकसित हिन्दी कविता की नवीन धारा का प्रतिनिधित्व करने वाली अर्द्धवार्षिक पत्रिका थी। इसे नयी कविता आन्दोलन के 'मुखपत्र' की तरह माना जाता है। इसका प्रकाशन सन् 1959 में आरम्भ हुआ। इसके सम्पादक जगदीश गुप्त, रामस्वरूप चतुर्वेदी एवं विजयदेव नारायण साही थे।

आरम्भ—नयी कविता-आन्दोलन का आरम्भ इलाहाबाद की साहित्यिक संस्था परिमल के कवि लेखकों-जगदीश गुप्त, रामस्वरूप चतुर्वेदी और विजयदेव नारायण साही के सम्पादन में 1954 में प्रकाशित नयी कविता (पत्रिका) से माना जाता है। इससे पहले अज्ञेय के सम्पादन में प्रकाशित काव्य-संग्रह 'दूसरा सप्तक' की भूमिका तथा उसमें शामिल कुछ कवियों के वक्तव्यों में अपनी कविताओं के लिए नयी कविता शब्द को स्वीकार किया गया था।

किन्तु नयी कविता की स्थिति भिन्न है। नया कवि किसी भी सिद्धान्त, मतवाद, सम्प्रदाय या दृष्टि के आग्रह की कट्टरता में फँसने को तैयार नहीं। संक्षेप में, नयी कविता कोई वाद नहीं है, जो अपने कथ्य और दृष्टि में सीमित हो। कथ्य की व्यापकता और सृष्टि की उन्मुक्तता नई कविता की सबसे बड़ी विशेषता है।

परम्परा का अस्वीकार—नई कविता परम्परा को नहीं मानती है।

लघु मानव की प्रतिष्ठा—मनुष्यों में वैयक्तिक भिन्नता होती है, उसमें अच्छाइयाँ भी हैं और बुराइयाँ भी। नई कविता के कवि को मनुष्य इन सभी रूपों में प्यारा है। उसका उद्देश्य मनुष्य की समग्रता का चित्रण है। नई कविता जीवन के प्रति आस्था रखती है। आज की क्षणवादी और लघुमानववादी दृष्टि जीवन-मूल्यों के प्रति स्वीकारात्मक दृष्टि है।

जिजीविषा—नई कविता में जीवन का पूर्ण स्वीकार करके उसे भोगने की लालसा है जीवन की एक-एक अनुभूतियों को व्यथा को सुख को सत्य मानकर जीवन को सघन रूप से स्वीकार करना क्षणों को सत्य माना है।

स्वानुभूति पर जोर—कथ्य के प्रति नयी कविता में स्वानुभूति का आग्रह है। नया कवि अपने कथ्य को ऐसे रूप में प्रस्तुत करना चाहता है, जिस रूप में वह उसे अनुभूत करता है।

Scanned with CamScanner

नई कविता ने जीवन को न तो एकांगी रूप में देखा न केवल महत् रूप में, उसने जीवन को जीवन के रूप में देखा। इसमें कोई सीमा निर्धारित नहीं की। जैसे-दु:ख सबको माँजता है और चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना न जाने, किन्तु-जिसको माँजता है, उन्हें यह सीख देता है कि सबको मुक्त रखें। (अज्ञेय)

नई कविता में दो तत्व प्रमुख हैं—अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि। वह अनुभूति क्षण की हो या एक समूचे काल की, किसी सामान्य व्यक्ति की हो या विशिष्ट पुरुष की, आशा की हो या निराशा की, अपनी सच्चाई में कविता के लिए जीवन के लिए भी अमूल्य।

नई कविता जीवन में एक-एक क्षण का सत्य मानती है और उस सत्य को पूरी हार्दिकता और पूरी चेतना से भोगने का समर्थन करती है। अनुभूति की सच्चाई जितना वह ले पाता है, उतना ही उसके काव्य के लिए सत्य है। नई कविता सामाजिक यथार्थ तथा उसमें व्यक्ति की भूमिका को परखने का प्रयास करती है। इसके कारण ही नई कविता का सामाजिक यथार्थ से गहरा सम्बन्ध है। परन्तु नई कविता की यथार्थवादी दृष्टि काल्पनिक या आदर्शवादी मानववाद से संतृष्ट न होकर जीवन का मूल्य, उसका सौन्दर्य, उसका प्रकाश जीवन में ही खोजती है। नई कविता द्विवेदी कालीन, छायावाद या प्रगतिवाद की तरह बने बनाये। मूल्यवादी नुस्खे पेश नहीं करती, बल्कि वह तो उसे जीवन की सच्ची व्यथा के भीतर पाना चाहती है। इसलिए नई कविता में व्यंग्य के रूप में कहीं पुराने मूल्यों की अस्वीकृति है, तो कहीं दर्द की सच्चाई के भीतर से उगते हुए नए मूल्यों की सम्भावना के प्रति आस्था। नई कविता ने धर्म, दर्शन, नीति, आचार सभी प्रकार के मूल्यों को चुनौती दी है। नई कविता का स्वर अपने परिवेश की जीवनानुभूति से फूटा है।

नई कविता में शहरी जीवन और ग्रामीण-जीवन-दोनों परिवेशों को लेकर लिखने वाले कवि हैं। अज्ञेय ने दोनों पर लिखा है। जबकि बालकृष्ण राव, शमशेर बहादुर सिंह, गिरिजाकुमार माथुर, कुँवरनारायण सिंह, धर्मवीर भारती, प्रभाकर माचवे, विजयदेवनारायण साही, रघुवीर, सहाय आदि कवि की संवेदनाएँ और अनुभूतियाँ शहरी परिवेश की हैं तो दूसरी ओर भवानीप्रसाद मिश्र, केदारनाथ सिंह, शंभुनाथ सिंह, ठाकुरप्रसाद सिंह, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल आदि ऐसे कवि हैं जो मूलत: गाँव की अनुभूतियाँ और संवेदना से जुड़ें।

शिल्पगत विशेषताएँ—नई कविता ने लोक-जीवन की अनुभूति, सौन्दर्य-बोध, प्रकृति और उसके प्रश्नों को एक सहज और उदार मानवीय भूमि पर ग्रहण किया। साथ ही साथ लोक-जीवन के बिम्बों, प्रतीकों, शब्दों और उपमानों को लोक-जीवन के बीच से चुनकर उसने अपने को अत्यधिक संवेदनापूर्ण और सजीव बनाया।

नई कविता की भाषा किसी एक पद्धति में बँधकर नहीं नई कविता की भाषा किसी एक पद्धति में बँधकर नहीं चलती। सशक्त अभिव्यक्ति के लिए बोलचाल की भाषा का प्रयोग इसमें अधिक हुआ है।

नई कविता में प्रतीकों की अधिकता है। जैसे-साँप तुम सभ्य तो हुए नहीं, न होंगे, नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया। एक बात पूँछु? उत्तर दोगे! फिर कैसे सीखा डँसना? विष कहाँ पाया? (अज्ञेय)।

नई कविता में छन्द को केवल घोर अस्वीकृति ही मिली हो यह बात नहीं, बल्कि इस क्षेत्र में विविध प्रयोग भी किये गये हैं। नये कवियों में किसी भी माध्यम या शिल्प के प्रति न तो राग है और न विराग।

Scanned with CamScanner